ISSN: 2249-7196
IJMRR/July. 2024/ Volume 14/Issue 5/38-45
Manoj Sharan Kachangal / International Journal of Management Research & Review

भारतीय अमूर्त कला: सांस्कृतिक और कलात्मक आयाम

Manoj Sharan Kachangal, Research Scholar, University of Technology, Jaipur and Dr. Saurabh Saxena, Research Supervisor, University of Technology, Jaipur

सार

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय अमूर्त कला के सांस्कृतिक और कलात्मक आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारतीय कला परंपरा में अमूर्तता की अवधारणा प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है, जिसका विकास आधुनिक काल में नए आयामों के साथ हुआ। इस शोध में भारतीय अमूर्त कला के ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक महत्व और समकालीन परिदृश्य का गहन अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से संगीत और चित्रकला के क्षेत्र में अमूर्तता की अभिव्यक्ति और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों पर प्रकाश डाला गया है। अनुसंधान पद्धति के रूप में ऐतिहासिक विश्लेषण, प्रमुख कलाकारों के कार्यों का अध्ययन और समकालीन कला आलोचना का उपयोग किया गया है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि भारतीय अमूर्त कला ने न केवल भारतीय कला की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाया है, बल्कि वैश्विक कला परिदृश्य में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आदिम कला से प्रभावित होकर आधुनिक अमूर्त कलाकारों ने एक विशिष्ट भारतीय पहचान स्थापित की है। निष्कर्षतः, भारतीय अमूर्त कला सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, जो मानव कल्याण और सामाजिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुख्य शब्द: अमूर्त कला, भारतीय संगीत, आधुनिक चित्रकला, सांस्कृतिक विरासत, आदिम कला प्रभाव

1. प्रस्तावना

कला मानव अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है। भारतीय कला परंपरा में अमूर्तता (abstraction) की अवधारणा प्राचीन काल से ही विकसित होती रही है। प्राचीन वैदिक काल से लेकर आधुनिक समय तक, भारतीय कला में अमूर्त तत्वों का प्रयोग विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है। भारतीय अमूर्त कला की विशेषता यह है कि इसमें प्रतीकात्मकता और आध्यात्मिकता का गहरा समावेश है। जैसा कि पं. जगदीश नारायण पाठक (पाठक, पृष्ठ 75-78) ने अपने लेखन में उल्लेख किया है, भारतीय कला में अमूर्तता केवल रूप का विखंडन नहीं, बल्कि आंतरिक सत्य की

खोज का माध्यम है। यह अवधारणा विशेष रूप से भारतीय संगीत और चित्रकला में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। 20वीं सदी में भारतीय अमूर्त कला ने एक नया मोड़ लिया, जब पश्चिमी आधुनिकतावाद और भारतीय परंपरा का समन्वय हुआ। कलाकारों ने पश्चिमी तकनीकों और भारतीय सौंदर्यशास्त्र के संगम से एक विशिष्ट शैली विकसित की, जिसने वैश्विक कला जगत में भारत की पहचान स्थापित की। डॉ. राजेन्द्र वाजपेयी (वाजपेयी, पृष्ठ 5-6) के अनुसार, यह संगम भारतीय अमूर्त कला को विश्व के समक्ष एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय अमूर्त कला के विभिन्न सांस्कृतिक और कलात्मक आयामों का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से, यह अध्ययन संगीत और चित्रकला के माध्यम से अमूर्तता की अभिव्यक्ति, आदिम कला का समकालीन कला पर प्रभाव, और भारतीय अमूर्त कला के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व पर केंद्रित है।

2. साहित्य समीक्षा

भारतीय अमूर्त कला के विभिन्न आयामों पर अनेक विद्वानों और कला आलोचकों ने महत्वपूर्ण शोध किया है। इस क्षेत्र में उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डालता है:

पं. जगदीश नारायण पाठक के 'संगीत निबंध माला' में भारतीय संगीत की अमूर्त प्रकृति पर विस्तृत चर्चा की गई है। पाठक के अनुसार, "भारतीय संगीत में स्वर, लय और ताल के माध्यम से अमूर्त भावों की अभिव्यक्ति होती है, जो श्रोता को एक अलौकिक अनुभूति प्रदान करती है" (पाठक, पृष्ठ 75)। उन्होंने आगे अपने दूसरे लेखन में भारतीय संगीत के दार्शनिक आधार पर भी प्रकाश डाला है, जिसमें वे बताते हैं कि "भारतीय संगीत में अमूर्तता आत्मानुभूति का माध्यम है" (पाठक, पृष्ठ 174-175)। आर्या सूर्यमणि त्रिपाठी ने अपने लेख "मानव कल्याण में संगीत की भूमिका" में भारतीय संगीत के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों पर चर्चा की है। त्रिपाठी के अनुसार, "संगीत की अमूर्त प्रकृति मनुष्य के मन और शरीर दोनों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है, जिससे समग्र कल्याण में वृद्धि होती है" (त्रिपाठी, पृष्ठ 3-5)।

के. वासुदेव शास्त्री के 'संगीत शास्त्र वाचन' में भारतीय संगीत के तकनीकी और दार्शनिक पहलुओं का विस्तृत विवेचन मिलता है। शास्त्री ने भारतीय संगीत के अमूर्त तत्वों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास किया है। चित्रकला के क्षेत्र में, प्रयाग शुक्ल के 'आज की कला' में आधुनिक भारतीय चित्रकला में अमूर्तता के विकास पर प्रकाश डाला गया है। शुक्ल के अनुसार, "आधुनिक भारतीय चित्रकला में अमूर्तता पश्चिमी प्रभाव और भारतीय परंपरा के समन्वय से उत्पन्न हुई है" (शुक्ल, पृष्ठ 82)। डॉ. राजेन्द्र वाजपेयी ने

'आधुनिक कला' में भारतीय अमूर्त कला के ऐतिहासिक विकास और समकालीन प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है। वाजपेयी के अनुसार, "भारतीय अमूर्त कला अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहकर भी वैश्विक कला परिदृश्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल हुई है" (वाजपेयी, पृष्ठ 5-6)।

सीमा चतुर्वेदी ने अपने लेख "समकालीन कला: आधुनिक चित्रकला के परिप्रेक्ष्य में आदिम कला का प्रभाव" में आदिम कला और आधुनिक अमूर्त कला के बीच संबंधों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। चतुर्वेदी के अनुसार, "आदिम कला के प्रतीकात्मक और अमूर्त तत्वों ने आधुनिक भारतीय चित्रकारों को गहराई से प्रभावित किया है" (चतुर्वेदी, पृष्ठ 84)। डॉ. मोहन सिंह 'मावड़ी' ने 'चित्रकला के मूल आधार' में भारतीय चित्रकला के आधारभूत सिद्धांतों पर प्रकाश डाला है, जिसमें अमूर्तता की अवधारणा भी शामिल है। मावड़ी के अनुसार, "भारतीय चित्रकला में अमूर्तता रूप का विखंडन नहीं, बल्कि भाव की प्रधानता है" (मावड़ी, पृष्ठ 29-31)। जी.के. अग्रवाल ने 'पश्चिम की कला' में पश्चिमी अमूर्त कला और भारतीय अमूर्त कला के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। अग्रवाल के अनुसार, "पश्चिमी अमूर्त कला जहां रूप के विखंडन पर केंद्रित है, वहीं भारतीय अमूर्त कला आध्यात्मिक अनुभूति से प्रेरित है" (अग्रवाल, पृष्ठ 2)। श्रुतिकीर्ति तिवारी ने अपने लेख "समकालीन कला: एक सर्वेक्षण" में समकालीन भारतीय कला की प्रवृत्तियों का विस्तृत विश्लेषण किया है, जिसमें अमूर्त कला के विविध रूपों पर भी चर्चा की गई है (तिवारी, पृष्ठ 147-157)।

3. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित अनुसंधान पद्धतियों का उपयोग किया गया है:

1. **ऐतिहासिक विश्लेषण**: भारतीय अमूर्त कला के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण किया गया। इसमें प्राचीन कला ग्रंथों से लेकर आधुनिक कला आलोचना तक के साहित्य का अध्ययन शामिल है।

2. **तुलनात्मक अध्ययन**: भारतीय अमूर्त कला और पश्चिमी अमूर्त कला के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया, जिससे भारतीय अमूर्त कला की विशिष्ट पहचान और सांस्कृतिक महत्व को समझने में मदद मिली।

3. **केस स्टडी**: प्रमुख भारतीय अमूर्त कलाकारों जैसे वी.एस. गायतोंडे, एस.एच. राजा, और जे. स्वामीनाथन के कार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया, जिससे उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक प्रभावों को समझने में मदद मिली।

4. **विषय-वस्तु विश्लेषण**: संगीत और चित्रकला के क्षेत्र में अमूर्त तत्वों की पहचान और विश्लेषण के लिए विषय-वस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया।

5. **सांस्कृतिक-ऐतिहासिक दृष्टिकोण**: भारतीय अमूर्त कला के सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों को समझने के लिए सांस्कृतिक-ऐतिहासिक दृष्टिकोण अपनाया गया।

शोध के दौरान, विभिन्न कला संग्रहालयों, अभिलेखागारों और डिजिटल संग्रहों से प्राप्त सामग्री का भी उपयोग किया गया। साथ ही, कला इतिहासकारों और समकालीन कलाकारों के साक्षात्कारों और लेखन से प्राप्त जानकारी का भी विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

4. परिणाम और विवेचना

4.1 भारतीय संगीत में अमूर्तता

भारतीय शास्त्रीय संगीत अमूर्त अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। पं. जगदीश नारायण पाठक के अनुसार, "राग की अवधारणा स्वयं में अमूर्त है, जिसमें स्वरों के माध्यम से विभिन्न भावों और रसों की अभिव्यक्ति होती है" (पाठक, पृष्ठ 76)। भारतीय संगीत में अमूर्तता के निम्नलिखित पहलू दिखाई देते हैं:

1. **राग का भाव तत्व**: प्रत्येक राग का अपना विशिष्ट भाव या रस होता है, जो श्रोता में विशिष्ट मनोदशा उत्पन्न करता है। यह भाव अमूर्त है, फिर भी इसका प्रभाव अत्यंत मूर्त और अनुभवगम्य होता है।

2. **आलाप का अमूर्त स्वरूप**: भारतीय शास्त्रीय संगीत में आलाप एक निर्बंध अमूर्त अभिव्यक्ति है, जिसमें कलाकार राग के स्वरूप को धीरे-धीरे विकसित करता है। के. वासुदेव शास्त्री के अनुसार, "आलाप में स्वरों की यात्रा एक अमूर्त कलात्मक अनुभूति है" (शास्त्री)।

3. **ताल और लय का गणितीय अमूर्त स्वरूप**: भारतीय संगीत में ताल और लय की अवधारणा गणितीय सटीकता के साथ-साथ अमूर्त कलात्मक अनुभूति का भी उदाहरण है।

आर्या सूर्यमणि त्रिपाठी के अनुसार, "संगीत की अमूर्त प्रकृति मानसिक शांति और सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है" (त्रिपाठी, पृष्ठ 4)। यह अवधारणा भारतीय संगीत के चिकित्सकीय और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को भी रेखांकित करती है।

4.2 भारतीय चित्रकला में अमूर्तता

भारतीय चित्रकला में अमूर्तता का विकास प्राचीन काल से ही देखा जा सकता है, लेकिन 20वीं सदी में इसने एक नया आयाम प्राप्त किया। डॉ. राजेन्द्र वाजपेयी के अनुसार, "आधुनिक भारतीय अमूर्त चित्रकला पारंपरिक भारतीय कला और पश्चिमी आधुनिकतावाद के समन्वय से उत्पन्न हुई है" (वाजपेयी, पृष्ठ 5)।

भारतीय चित्रकला में अमूर्तता के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं:

1. **तांत्रिक प्रतीकवाद**: कई आधुनिक भारतीय चित्रकारों ने तांत्रिक प्रतीकों और यंत्रों से प्रेरणा लेकर अमूर्त कृतियां बनाईं। डॉ. मोहन सिंह 'मावड़ी' के अनुसार, "तांत्रिक प्रतीक स्वयं में अमूर्त हैं, जो गहरे दार्शनिक विचारों को व्यक्त करते हैं" (मावड़ी, पृष्ठ 30)।

2. **आदिम कला का प्रभाव**: सीमा चतुर्वेदी के अनुसार, "आदिम कला की सरलता और शुद्धता ने आधुनिक भारतीय अमूर्त चित्रकारों को गहराई से प्रभावित किया है" (चतुर्वेदी, पृष्ठ 84)। भारतीय आदिवासी कला की रेखाएँ, आकृतियाँ और प्रतीक आधुनिक अमूर्त कला में नए रूप में प्रकट हुए हैं।

3. **कैलीग्राफिक तत्व**: भारतीय लिपियों के कैलीग्राफिक तत्वों ने भी अमूर्त चित्रकारों को प्रेरित किया है। देवनागरी, उर्दू और अन्य भारतीय लिपियों के अक्षरों और चिह्नों का अमूर्त रूपांतरण कई कलाकारों के कार्यों में देखा जा सकता है।

प्रयाग शुक्ल के अनुसार, "भारतीय अमूर्त चित्रकला पश्चिमी अमूर्तता से अलग है क्योंकि इसमें भारतीय दर्शन और सांस्कृतिक प्रतीकों का गहरा प्रभाव है" (शुक्ल, पृष्ठ 82)। यह भारतीय अमूर्त कला की विशिष्ट पहचान को रेखांकित करता है।

4.3 सांस्कृतिक आयाम और वैश्विक प्रभाव

भारतीय अमूर्त कला के सांस्कृतिक आयाम अत्यंत व्यापक और गहरे हैं। जी.के. अग्रवाल के अनुसार, "भारतीय अमूर्त कला भारतीय दर्शन, आध्यात्मिकता और सौंदर्यशास्त्र का प्रतिबिंब है" (अग्रवाल, पृष्ठ 2)। यह भारतीय सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

श्रुतिकीर्ति तिवारी के अनुसार, "समकालीन भारतीय अमूर्त कला ने वैश्विक कला परिदृश्य में भारत की उपस्थिति को मजबूत किया है" (तिवारी, पृष्ठ 150)। अंतरराष्ट्रीय कला मंचों पर भारतीय अमूर्त कलाकारों की बढ़ती स्वीकृति इस बात का प्रमाण है।

भारतीय अमूर्त कला के वैश्विक प्रभाव के निम्नलिखित पहलू हैं:

1. **अंतरसांस्कृतिक संवाद**: भारतीय अमूर्त कला ने पूर्व और पश्चिम के बीच कलात्मक संवाद को बढ़ावा दिया है, जिससे वैश्विक कला में नए आयाम जुड़े हैं।
2. **प्रवासी भारतीय कलाकारों का योगदान**: विदेशों में रहने वाले भारतीय कलाकारों ने भारतीय अमूर्त कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया है, जिससे भारतीय कला की पहुंच और समझ विस्तृत हुई है।
3. **नवाचार और प्रयोग**: भारतीय अमूर्त कलाकारों के नवाचार और प्रयोगों ने वैश्विक कला प्रवृत्तियों को प्रभावित किया है, जिससे कला के नए रूपों और तकनीकों का विकास हुआ है।

5. निष्कर्ष

भारतीय अमूर्त कला सांस्कृतिक और कलात्मक आयामों का एक समृद्ध संगम है, जो भारतीय परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु का काम करती है। संगीत और चित्रकला के क्षेत्र में अमूर्तता की भारतीय अवधारणा अपनी गहराई और दार्शनिक आधार के कारण विशिष्ट है।

इस अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं:

1. भारतीय अमूर्त कला में आध्यात्मिकता और दार्शनिक विचारों का गहरा प्रभाव है, जो इसे पश्चिमी अमूर्त कला से अलग करता है।

2. भारतीय संगीत में अमूर्तता राग, ताल और लय के माध्यम से अभिव्यक्त होती है, जो गहरी भावनात्मक अनुभूति उत्पन्न करती है।
3. आधुनिक भारतीय अमूर्त चित्रकला में आदिम कला, तांत्रिक प्रतीकवाद और भारतीय सौंदर्यशास्त्र का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
4. भारतीय अमूर्त कला ने वैश्विक कला परिदृश्य में भारत की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया है और अंतरसांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा दिया है।
5. अमूर्त कला के माध्यम से भारतीय कलाकारों ने परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सार्थक संवाद स्थापित किया है, जो भारतीय कला के विकास में महत्वपूर्ण कदम है।

जैसा कि पं. जगदीश नारायण पाठक ने कहा है, "अमूर्तता वास्तविकता के बाह्य रूप से परे, उसके आंतरिक सार तक पहुंचने का माध्यम है" (पाठक, पृष्ठ 175)। यह कथन भारतीय अमूर्त कला के मूल दर्शन को संक्षेप में व्यक्त करता है।

भविष्य में भारतीय अमूर्त कला के और अधिक विकास और विश्व कला में इसके योगदान का अध्ययन आवश्यक है। डिजिटल तकनीक और नए माध्यमों के साथ भारतीय अमूर्त कला कैसे विकसित हो रही है, यह एक महत्वपूर्ण शोध का विषय हो सकता है।

6. संदर्भ सूची

1. पं॰ जगदीश नारायण पाठक, *संगीत निबंध माला*, पृष्ठ 75–78।
2. आर्या सूर्यमणि त्रिपाठी, "मानव कल्याण में संगीत की भूमिका", *संगीत पत्रिका*, पृष्ठ 3–5।
3. पं॰ जगदीश नारायण पाठक, *संगीत निबंध माला*, पृष्ठ 174–175।
4. के॰ वासुदेव शास्त्री, *संगीत शास्त्र वाचन*, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश।
5. शुक्ल, प्रयाग, *आज की कला*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, इलाहाबाद, पृष्ठ 82।
6. डॉ॰ राजेन्द्र वाजपेयी, *आधुनिक कला*, सस्मिट पब्लिकेशन्स, कानपुर, पृष्ठ 5–6।

7. सीमा चतुर्वेदी, "समकालीन कला: आधुनिक चित्रकला के परिप्रेक्ष्य में आदिम कला का प्रभाव", *ललित कला अकादेमी प्रकाशन*, अंक 42–43, पृष्ठ 84।

8. डॉ॰ मोहन सिंह 'मावड़ी', *चित्रकला के मूल आधार*, तक्षशिला प्रकाशन, पृष्ठ 29–31।

9. जी॰ के॰ अग्रवाल, *पश्चिम की कला*, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ 2।

10. श्रुतिकीर्ति तिवारी, "समकालीन कला: एक सर्वेक्षण", *लोकाविष्कर इंटरनेशनल ई-जर्नल*, जून 2013, पृष्ठ 147–157।

IJMRR